[5]

ः ओम्र जगदीश हरे ः

ओम् जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनोके संकट दास जनों के संकट क्षण में दूर करे ।। धृ ।।

जो ध्यावे फल पावे दु:ख विनसे मन का स्वामी दु:ख विनसे मन का ।
सुख सम्पती घर आवे सुख सम्पती घर आवे कष्ठ मिटे तन का ।। ओम् ।। 1 ।।

माता पिता तुम मेरे शरण पडूं मै किसकी स्वामी शरण पडूं मैं किसकी
तुम बिन और न दुजा प्रभु दिन और न दुजा आस करू मैं किसकी ।। ओम् ।। 2 ।।

तूम पुरण परमात्मा तुम अंतरर्यामी स्वामी तुम अंतरर्यामी
पार ब्रम्ह परमेश्वर पार ब्रम्ह परमेश्वर तुम सैबके स्वामी ।। ओम् ।। 3 ।।

तुम करूणा के सागर तुम पालन करता स्वामी तुम पालन करता
मैं मूरख फल कामी मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो करता ।। ओम् ।। 4 ।।

विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा स्वामी पाप हरो देवा
श्रध्दा भक्ती बढावो श्रध्दा भक्ती बढावो संतन की सेवा ।। ओम् ।। 5 ।।

तन मन धन है तेरा सब कुछ है तेरा स्वामी सब कुछ है तेरा
तेरा तुझ को अर्पण तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा ।। ओम् ।। 6 ।।

दिन बंधु दु:ख हरता ठाकुर तुम मेरे स्वामी रक्षक तुम मेरे
अपने हाथ उठाओ अपनी शरण बिठाओ व्दार खडा मैं तेरे ।। ओम् ।। 7 ।।